बाइबल टीचर

वर्ष 18 दिसम्बर 2020 अंक 1

सम्पादकीय

क्या आज हमें आधुनिक सुसमाचार की आवश्यकता है?

आज हम एक ऐसे युग में रह रहे है, जहां लोगों को नई आधुनिक चीजें देखने को मिल रही है। संसार बहुत तीव्रता के साथ आगे बढ़ रहा है। निरन्तर बहुत से बदलाव आ रहे है। मोबाईल फोन तथा इंटरनेट ऐसी चीजें है जिनके विषय में हमने कभी सोचा तक नहीं था। आज भी बहुत से आविष्कार हो रहे है। सबसे भयानक बात जो संसार में 2020 में घटी है वो है कोरोनावायरस क्योंकि इससे लोगों की मृत्यु लाखों में हुई है। सारे संसार को इस वायरस ने हिला कर रख दिया है। लोगों की आशा है कि शीघ्र वैक्सीन आये ताकि उन्हें इस बीमारी से छुटकारा मिल सके। परन्तु इन सब बातों के बावजूद क्या हमें किसी आधुनिक सुसमाचार की आवश्यकता है?

सब कुछ बदल रहा है तो क्या परमेश्वर और सुसमाचार भी बदल रहा है? क्या इस बदले हुए संसार में हमें दूसरा सुसमाचार लाने की आवश्यकता है?

यीशु का सुसमाचार लगभग 2000 साल पहले दिया गया था। यीशु जो कि वचन के रूप में परमेश्वर के साथ था, उसने देह धारण करके इस संसार में जन्म लिया। (यूहन्ना 1:1-4 और पद 14) यीशु के चेलों ने प्राचीन सुसमाचार का प्रचार किया था और वो सुसमाचार था यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, कब्र में गाड़ा गया और तीसरे दिन जीवित हो गया, जिसे हम पुन्रूत्थान कहते है। (1 कुरि. 15:1-4)। आज के युग में बहुत से आधुनिक सुसमाचार फैलाये जा रहे है तथा एक बहुत ही प्रचलित सुसमाचार है कि यीशु में विश्वास कर लो तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। प्रेरितों द्वारा दिया गया सुसमाचार था यीशु मारा गया, गाड़ा गया और जी उठा परन्तु कई अगुवों को यह सुसमाचार बड़ा पुराना लगता है। उनके अनुसार सुसमाचार है यीशु ने संसार में जन्म लिया और उसमें विश्वास कर लो तो आप को उद्धार मिल जायेगा। जबकि यीशु ने कहा था, "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस 16:15-16)। हम इस सुसमाचार को बदल नहीं सकते। समय के साथ-साथ सुसमाचार बदल नहीं गया है।

यीशु ने यरदन नदी में बपतिस्मा लिया, यूहन्ना ने उसे बपतिस्मा दिया। यीशु की जंगल में शैतान ने परीक्षा ली। परमेश्वर के पुत्र यीशु ने शैतान का डट कर सामना किया। यीशु निष्पाप था क्योंकि उसने कभी कोई पाप नहीं किया। यीशु ने

बार-बार शैतान को जवाब दिया कि ऐसा लिखा है" (मत्ती 4:4)। आज सबसे अधिक हमें परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है। प्रेरित लोग सीधे-साधे लोग थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी बड़ापन नहीं दिखाया। उन्होंने ईमानदारी से सत्य सुसमाचार का प्रचार किया।

यीशु की शिक्षाओं ने संसार को बदल दिया था। प्राचीन सुसमाचार मनुष्य का उसके पापों से उद्धार कर सकता है। आज लोगों को वही पुराने सुसमाचार की आवश्यकता है। यह सुसमाचार सामर्थपूर्ण है। तथा प्रेरित पौलुस ने कहा था कि "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता" (रोमियों 1:16)। प्रेरित लोगों ने कभी सुसमाचार प्रचार करने में कोई झिझक महसूस नहीं की। आज यीशु का सुसमाचार बुरे से बुरे मनुष्य को बदल सकता है। प्रेरित पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन इस सुसमाचार का प्रचार किया था। उसने लोगों को वहां बताया कि यीशु कौन था और उसने उनके लिये क्या किया? जब लोगों ने उसके प्रचार को सुना तब उन्होंने पतरस और प्रेरीतों से पूछा कि हम क्या करें तब उसने उनसे कहा कि "मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु के नाम से बपतिस्मा ले" (प्रेरितों 2:37-38)। उसी दिन लगभग तीन हजार लोगों ने उस सुसमाचार को सुनकर बपतिस्मा लिया था। वहां पतरस ने उनसे यह नहीं कहा कि यीशु में विश्वास कर लो तब आपको उद्धार मिलेगा।

उन लोगों को पतरस ने बताया कि यह वही यीशु है जिसे तुमने क्रूस की मृत्यु दी थी। उस दिन इस सुसमाचार के द्वारा नये नियम की कलीसिया की स्थापना हुई थी। इस कलीसिया को मसीह की कलीसिया के नाम से जाना जाता है। यीशु ने इस कलीसिया को बनाने का वायदा किया था। (मत्ती 16:18) आज के मनुष्य को प्राचीन गास्पल या सुसमाचार की आवश्यकता है।

इस सुसमाचार को मानने के द्वारा लोग अपने पापों से मन फिराकर यीशु में नई सृष्टि बन गये थे। (2 कुरि. 5:17) प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्री में कुरिन्थ के मसीहीयों से कहा था "क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामी न मूर्तिपूजक न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़ न गाली देने वाले, न अंधेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।" (1 कुरि. 6:9-11) आज नये नियम का सुसमाचार किसी भी पापी को बदल सकता है।

आज मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं को बढ़ा लिया है। प्रेरित लोग भी हमारी तरह साधारण मनुष्य थे, परन्तु उन्होंने सुसमाचार को वैसे ही प्रचार किया जैसे उन्हें प्रभु द्वारा आज्ञा दी गई थी। (मत्ती 28:18-19)। आज कई लोगों ने सुसमाचार को चंगाई में बदल दिया है। आज चंगाई सभाओं पर कई लोग अधिक ध्यान देते है। लोग यीशु के पास शारीरिक चंगाई से छुटकारा पाना चाहते है। उन्हें सुसमाचार सुनने या आत्मा की चंगाई से कोई लेना-देना नहीं है। यीशु जीवन की रोटी है। (यूहन्ना 6:51), वह जीवन का जल है। (यूहन्ना 7:37), वह जगत की ज्योति है। (यूहन्ना

8:2), टूटे हुए दिलों का सहारा है यीशु (यूहन्ना 14:1), थके हुए लोगों को विश्राम देता है। (मत्ती 11:28-30)। आधुनिक समय में लोग सुसमाचार को मानने की बजाय प्राचिन सुसमाचार नहीं चाहते। पाप आज भी पाप है, पाप से बचने के लिये यीशु की आना माननी आवश्यक है। सुसमाचार भी वही है जो प्रेरितों ने दिया है।

परमेश्वर ने हमें बाइबल क्यों दी?

सनी डेविड

आज मैं आपको एक ऐसी पुस्तक के बारे में बताने जा रहा हूं, जो कि संसार की लगभग सारी भाषाओं में और संसार के लगभग सारे देशों में उपलब्ध है। यू तो यह अद्‌भुत पुस्तक सैकड़ों वर्ष पुरानी है, किन्तु तोभी इसकी प्रतियां भारी संख्या में हर साल इस प्रकार छपकर निकलती है जैसे कि किसी नई पुस्तक का उदघाटन हुआ है। प्रति वर्ष इस पुस्तक से संबंधित इतना अधिक साहित्य छपकर निकलता है जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। श्रेष्ठता से परिपूर्ण इस पुस्तक को हम बाइबल कहते है। हम इसे बाइबल इसलिए कहते हैं क्योंकि इस पुस्तक में छोटी-बड़ी छियासठ पुस्तकें शामिल है और छियासठ पुस्तकों के बारे में एक बड़ी ही अद्‌भुत बात यह है कि इन पुस्तकों को लिखने में लगभग चालीस लोगों ने भाग लिया तथा ये लोग छः अलग-अलग देशों के रहने वाले थे और एक दूसरे से अपरिचित थे, ये सब लोग एक ही समय में नहीं हुए थे परन्तु लगभग सोलह सौ वर्षों के दौरान अलग-अलग जगहों पर हुए अर्थात बाइबल के ये सब लेखक समय के दृष्टिकोण से दूरी के दृष्टिकोण से और सभ्यता तथा भाषा के दृष्टिकोण से एक दूसरे से बिल्कुल अलग और अपरिचित थे, परन्तु विचित्र बात यह है कि फिर भी बाइबल की ये सारी पुस्तकें एक ही लक्ष्य तथा एक ही उद्देश्य को प्रगट करती है। और यह बात वास्तव में बड़ी ही ध्यान देने योग्य है। मान लीजिए, कि बाइबल के अलावा यदि कोई और पुस्तक इसी प्रकार की परिस्थितियों के मध्य लिखी जाती तो क्या उस पुस्तक के विषय में भी ऐसा सच हो सकता था? वास्तव में, नहीं। तो फिर बाइबल के बारे में यह सच क्यों है? मेरे विचार में, इस बात का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण हमें स्वयं बाइबल में ही मिलता है, जैसा कि हम एक जगह पढ़ते है कि "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।" (1 तीमुथियुस 3:15) सो जबकि उन चालीस विभिन्न लोगों ने बाइबल की पुस्तकों को लिखा था, परन्तु वास्तव में, उन सभी पुस्तकों का एकमात्र मूल लेखक स्वयं परमेश्वर था। अर्थात, जबकि बाइबल की पुस्तकों को लिखने में परमेश्वर ने उन लोगों की बुद्धि और हाथों का उपयोग किया, किन्तु वास्तव में, उन लोगों ने केवल वही लिखा था जिन बातों को लिखने की प्रेरणा उन्हें परमेश्वर की ओर से मिली थी। सो बाइबल वास्तव में परमेश्वर का वचन है। परन्तु किस कारण परमेश्वर ने बाइबल को लिखवाया और किस उद्देश्य से इस पुस्तक को उसने दिया है। इस लेख में हम इसी महत्वपूर्ण विषय पर विचार करेगें।

परमेश्वर को प्रगट करने के लिये

इसमें कोई शक नहीं कि हम सभी का यह विश्वास है कि एक परमात्मा, अर्थात परमेश्वर है, और सम्पूर्ण सृष्टि परमेश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करती है, क्योंकि वह प्रत्येक वस्तु का रचने वाला है। उसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर को बाइबल हम पर प्रगट करती है। बाइबल हमारे सृष्टिकर्ता परमेश्वर को पहिचानने में हमारी सहायता करती है; बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24)। बाइबल बताती है कि मनुष्य अपने चाल-चलन से परमेश्वर को शोकित या प्रसन्न कर सकता है; जब हम परमेश्वर की इच्छा के विरोध में चलते है तो हम उसे दुख पहुंचाते है, परन्तु यदि हम उसकी इच्छा पर चले तो वह हम से प्रसन्न होता है। बाइबल में परमेश्वर ने हमारे लिये अपनी इच्छा को प्रगट किया है, बाइबल के द्वारा उसने हमें बताया है कि वह हम से क्या चाहता है और हम किस प्रकार उसकी महिमा कर सकते है।

हमारी अगुवाई के लिये

मनुष्य को एक अगुवे की आवश्यकता है, क्योंकि हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है, कि मनुष्य स्वयं नैतिक तथा आत्मिक दृष्टिकोण से अपनी अगुवाई नहीं कर सकता। उसे एक विशेष अधिकार और आदर्श की आवश्यकता है, हमें अगुवाई के लिये परमेश्वर के ज्ञान और बुद्धि की आवश्यकता है और बाइबल मनुष्य की इस आवश्यकता को पूर्ण करती है। क्योंकि "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। सो बाइबल को परमेश्वर ने हमारी अगुवाई के लिये हमें दिया है, ताकि हम परमेश्वर की इच्छा पर चलकर सिद्ध बनें।

जीवन के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न को समझाने के लिये

मनुष्य अकसर सोचता है, कि मैं कहां से आया? मेरा इस जीवन में क्या उद्देश्य है? और मैं इस जीवन के बाद कहां जाऊंगा? केवल बाइबल ही हमारे इन महत्वपूर्ण प्रश्नो का उत्तर हमें देती है। बाइबल हमें बताती है, कि आरंभ मैं सबसे पहिले परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनो में जीवन का श्वास डाला और वह जीवता प्राणी बन गया। (उत्पत्ति 1:27)। बाइबल बाताती है, कि मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य और उद्देश्य इस जीवन में परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करता है क्योंकि एक दिन परमेश्वर सारे मनुष्यों का उनके अपने-अपने कामों के अनुसार न्याय करेगा। (सभोपदेशक 12:13, 14)। बाइबल बताती है, कि परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना निश्चित किया है। (इब्रानियों 9:27)। जब मनुष्य मर जाता है तो बाइबल बताती है, "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया लौट जाएगी।" (सभोपदेशक 12:7)। बाइबल बताती है कि न्याय के दिन परमेश्वर की सामर्थ से सारे मरे हुए जी उठेंगे, और उसके न्यायासन के सामने अपना-अपना प्रतिफल प्राप्त करने के लिये उपस्थित होंगे। (यूहन्ना 5:28, 29; 2 कुरिन्थियों 5:10)। और तब, प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने

प्रतिफल के अनुसार या तो अनन्त जीवन में या अनन्त दण्ड के विनाश में प्रवेश करेगा। (मत्ती 25:46)।

पाप तथा उसके परिणाम को प्रगट करने के लिये

बाइबल बताती है कि प्रत्येक मनुष्य पापी है। (रोमियों 3:23)। हम अपने विचारो, शब्दों और कामों से और उन कार्यों को न करके जो हमें करने चाहिए पाप करते है। प्राय: प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन कई बार पाप करता हैं किन्तु, मान लीजिये, यदि हम एक दिन में केवल तीन ही पाप करें, तो एक वर्ष में हम परमेश्वर के सामने एक हजार से भी अधिक अपराधों के लिये दोषी ठहरेंगे। परन्तु, सोचिए, कि तब अपने पूरे जीवनकाल में हमारे ऊपर कितने पापों का बोझ होगा?

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है परन्तु वह पाप से घृणा करता है। बाइबल बताती है कि हमारे अपराधों और अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर का मुंह हमसे ऐसा छिपा है कि वह हमारी नहीं सुनता। मनुष्य पापी है, और परमेश्वर पवित्र है। बाइबल बताती है, कि परमेश्वर सर्वसिद्ध, पवित्र और धर्मी है। इसलिये यह असंभव है कि मनुष्य अपने भीतर पाप के रहते हुए परमेश्वर की उपस्थिति में उसके साथ रहे। परन्तु यदि मनुष्य के पाप क्षमा नहीं हो सकते तो वह न केवल इस जीवन में परन्तु आने वाले जीवन में भी सदा परमेश्वर से अलग रहेगा। किन्तु, क्योंकि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है सो वह उसके पाप क्षमा करके उसके साथ अपना मेल करना चाहता है। परन्तु परमेश्वर का पवित्र और न्यायी स्वभाव इस बात की मांग करता है कि इससे पहिले हमारे पापों का दण्ड अवश्य ही भरा जाए। पाप वास्तव में परमेश्वर के निकट इतनी अधिक घृणाजनक विशाल वस्तु है, कि उसका कर्जा चुकाने के लिये मनुष्य का सारा परिश्रम वा प्रयत्न अपर्याप्त है, अर्थात मनुष्य कुछ भी करके या देकर अपने पापों की क्षमा स्वयं प्राप्त नहीं कर सकता। मनुष्य का सारा ज्ञान, धन, विद्या और भले काम, सब के सब मिलकर भी उसे पाप के दण्ड से मुक्त नहीं करा सकते। सो शायद आप सोचे, कि क्या मनुष्य के पास पाप से छुटकारा प्राप्त करने की कोई आशा नहीं? क्या कोई ऐसा मार्ग नहीं जिसके द्वारा हम अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें?

पाप से छुटकारा प्राप्त करने की परमेश्वर की योजना को प्रगट करने के लिये

बाइबल हम पर पाप से छुटकारा प्राप्त करने की परमेश्वर की योजना को प्रगट करती है। बाइबल हमें बताती है कि 'जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी हमारे लिये मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?" (रोमियों 5:6-10)।

सो जबकि मनुष्य अपने आपको बचाने में असमर्थ था, तो परमेश्वर ने अपने प्रेम से प्रोत्साहित होकर अपनी सामर्थ को एक क्रूस के ऊपर प्रगट किया। वहां उसने

अपने एकलौते पुत्र यीशु को संसार के सारे मनुष्यों के पापों के कारण दोषी ठहराकर हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान किया। क्योंकि यीशु मसीह में कोई पाप नहीं था, इसलिये परमेश्वर ने उसके बलिदान को हम सबके पापों के कर्जे के रूप में स्वीकार कर लिया। सो इस तरह, यह संभव हो गया कि परमेश्वर यीशु के द्वारा हमारे पापों को क्षमा कर सकता है, क्योंकि यीशु ने हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर हमारे स्थान पर पाप के कारण दण्ड सहा, और इस प्रकार उसने परमेश्वर की पवित्रता और न्याय की उस मांग को पूरा कर दिया जो हमारे विषय में था। सो बाइबल बताती है, कि हम यीशु मसीह के द्वारा अपने पापो से छुटकारा प्राप्त करके अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं, और उसकी उपस्थिति में रहकर अनन्त जीवन की आशीष प्राप्त कर सकते है।

परन्तु हम किस प्रकार यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करते है? बाइबल बताती है, कि जब मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास करता है, और अपने पापों से मन फिराता है, और यीशु की अज्ञानुसार अपने पापों की क्षमता के लिये जल के भीतर बपतिस्मा लेता है, तो वह एक नया मनुष्य बन जाता है, उसके सारे पाप यीशु क्षमा करता है। और फिर, प्रभु चाहता है कि वह मनुष्य, अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए उसके पीछे हो ले। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; यूहन्ना 3:3-5 प्रकाशितवाक्य 2:10)।

क्या आप अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के पास आना चाहते है? तो यीशु में विश्वास लाएं और उसकी आज्ञाओं का पालन करें। यदि आप बाइबल के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो हमारे यहां से बाइबल के मुफ्त पाठों को मंगाकर पढ़ें। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा आपकी आत्मा की अगुवाई करे।

मनुष्य की आत्मा

जे. सी. चोट

इस संसार में इससे बड़ी और कोई बात नहीं है कि हम परमेश्वर को जाने। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि वह हमसे क्या चाहताहै? हम उसकी आज्ञा मानकर किस प्रकार से उद्धार पा सकते है?

एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय, जिसके विषय में हम देखना चाहते है वो है मनुष्य की आत्मा। यीशु ने प्रचार करते हुए एक बार लोगों से कहा था, ""यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" (मत्ती 16:26)। क्या आप जानते है कि आपके शरीर में आत्मा है और यह पूरे संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। परन्तु यदि मनुष्य अपनी आत्मा को खो दे तो उसे क्या लाभ होगा? फिर उसने कहा कि, "मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा।"? यदि आपकी आत्मा खोई हुई है और आप उसे वापस सही लाना चाहते है, तो आप इसके लिये क्या करेंगे? क्या आप अपनी पाप भरी जिंदगी को

छोड़ना चाहेंगे? क्या अपनी आत्मा को उचित मार्ग पर लाने के लिये आप अपना मन प्रभु को देगें? अपनी आत्मा को नर्क से बचाने के लिये आपको अपना जीवन प्रभु को समपर्ण करना होगा।

यीशु ने अपने जीवन को क्रूस पर बलिदान कर दिया ताकि आपकी आत्मा बच सके। बाइबल हमें बताती है कि यीशु के लहु के द्वारा हमारा उद्धार होता है। जब हम उसकी आज्ञा मानकर उसके लहु के सम्पर्क में आ जाते है तब उसने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें हमारे पापों से मुक्ति देगा। जैसे कि प्रेरित पतरस कहता है, "क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी, सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ है। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ है। उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहिले ही से जाना गया था, पर अब इस अंतिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ। जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया, और महिमा दी; कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।" (1 पतरस 1:18-21) फिर आगे वह मसीहीयों से कहता है, "क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा, ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" (पद 23)।

मनुष्य दो चीजों से बना हुआ है यानी शरीर और आत्मा से और उनका एक दूसरे का गहरा संबंध है। याकूब कहता है, "निदान जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है" (याकूब 2:26)। मनुष्य के शरीर के साथ उसकी आत्मा भी महत्वपूर्ण है। शरीर मिट्टी का बना है और आत्मा मृत्यु के पश्चात परमेश्वर के पास लौट जाती है। बाइबल कहती है "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिसने उसे दिया है, लौट जाएगी।" (सभोपदेशक 12:7)। यीशु ने सिखाया था कि जो लोग शरीर को घात कर सकते है परन्तु आत्मा को नहीं, उसने मत डरो। उसने इस प्रकार से कहा था, "जो शरीर को घात करते है, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। (मत्ती 10:28)।

अब प्रश्न यह है कि आप अपनी आत्मा के विषय में क्या सोचते है? इसको बचाने के लिये आपने कभी कुछ सोचा है? केवल यीशु आत्मा का उद्धार कर सकता है और यह तब ही संभव होगा जब हम उसकी आज्ञा को मानकर उसकी इच्छाअनुसार चलते है। इसके लिये आपको यह समझाना होगा कि अप परमेश्वर की दृष्टि में पापी है। यानि आप अपने पापों में खोए हुए है। और आपको जानना चाहिए कि आपको उद्धार की आवश्यकता है। आपको यह जानने की आवश्यकता है कि प्रभु यीशु आपके लिये क्रूस पर मारा गया, गाडा गया और तीसरे दिन कब्र से जी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)। यीशु ने आपके पापों के लिये अपना लोहू बहाया ताकि आपके पाप धोये जा सके। आपको यह विश्वास करना पड़ेगा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। और वह अपनी सामर्थ से आपका उद्धार करने के योग्य है। जब तक कोई पाप में चलता रहेगा उसका उद्धार नहीं हो सकता। यदि आप उद्धार पाना चाहते है। तो आपको अपने पापों से मन फिराना पड़ेगा। जब फिल्लिपुस

प्रचारक ने इथिओपिआ के व्यक्ति को प्रचार किया तब उसने उससे पूछा कि क्या "तू यह विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है? हम प्रेरितों के 8 अध्याय में पढ़ते है कि उसने जब यह अंगीकार किया कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है तब उसने उसे जल में बपतिस्मा दिया। इसी प्रकार से यदि कोई व्यक्ति उद्धार पाना चाहता है वह यीशु में विश्वास करके उसका अंगीकार करके बपतिस्मा लेता है, यीशु उसका उद्धार करता है। बपतिस्मा जल में गाड़े जाना है, और यह उद्धार पाने के लिये यीशु की आज्ञा है। (मरकुस 16:16) आप इसके विषय में प्रेरितों 2:3, 8, रोमियों 6 तथा गलतियों 3:26-27 में भी पढ़ सकते है।

पिन्तेकुस्त के दिन यानि यहूदियों के त्योहार के दिन कई स्थानों से लोग एक स्थान पर इक्ट्ठे थे और पतरस ने वहां यीशु का प्रचार किया और लगभग 3000 लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 2:47)। यह तीन हजार लोग तीन हजार आत्माएं थी। यह आत्माएं यदि प्रभु के प्रति विश्वास योग्य बनी रहेगी तो उन्हें जीवन का मुकुट मिलेगा (प्रकाशित 2:10)। अब देखिये पौलुस ने मसीहीयों को अपनी पत्री में क्या लिखा है, "हे भाईयो, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है। देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं, कि हम सब तो नहीं सोएगे, परन्तु सब बदल जाएगे। और यह क्षण भर में पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा : क्योंकि तुरही फूकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएगे, और हम बदल जाएगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।" (1 कुरि. 15:50-57)।

माताओ, अपने नन्हें बालकों और बालिकाओं को सिखाओ और उनकी आत्मिक बातों में सहायता करो

बैटी बर्टन चोट

भाग दो

पुरुष घर का अगुवा बने, महिलाएं अपने पति की सहायक बनें

लड़के को लड़कों वाली बातें सिखाना और पैसे के लेनदेन में जिम्मेदार होने के पहलू से बढ़कर उन्हें परमेश्वर की भक्ति करने वाले व्यवहार को सिखाना आवश्यक है। उसे यह सिखाना आवश्यक है कि विनम्रता से और प्रेमपूर्वक वह अपने घर का मुखिया है और उसे अपनी पत्नी और बच्चों व संसार के बीच खड़ा होना है। उसे

आत्मिक अगुआ बनना है और अपने परिवार की दशा और दिशा के लिए परमेश्वर को जवाबदेह होना है।

आज की लड़की का पालन-पोषण आमतौर पर पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा करने वाला होता है। बचपन से ही ऐसी शिक्षा लड़की को अपने पति के साथ उलझने के लिए तैयार कर देती है। भक्तिपूर्ण पहलू यह है कि विवाह होने पर वह जीवन में उस समय के लिए अपने आपको तैयार करे जिससे वह अपने जीवनसाथी के लिए जिसे उसने चुना है (या जिसने उसे चुना है) प्रेम करे और अपने परिवार को संभाले और समझे कि परमेश्वर ने ही उसे परिवार की भलाई की जिम्मेदारी दी है। बेशक उसे अच्छी पढ़ाई-लिखाई से अपनी समझ को बढ़ाना चाहिए ताकि वह अपने पति का साथ बेहतर ढंग से दे सके और अपने बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ा लिखा सके। बेशक उसे अच्छी शिक्षा के साथ अपनी समझ को बढ़ाना चाहिए ताकि वह अपने पति की अच्छी सहयोगी बन सके और अपने बच्चों को सही ट्रेनिंग देने वाली हो सके।

अफसोस है कि केवल पत्नी, माता और घर-बार संभालने वाली होने के नीरस काम के लिए स्त्रियों के लिए रोना पीटना एक सनक बन गई है। इसे उबाऊ, बोरिंग घोषित कर दिया गया है और कई माताएं किसी आफिस में काम करने के जोश के लिए बच्चों के पालन-पोषण के उबाउपन से बचना चाहती है। इसकी अधिकतर बातें सिखाया गया व्यवहार है जिसमें हमारी संस्कृति बार-बार स्त्रियों को यह बताने में लगी है कि केवल कठपुतलियां और बेकार लोग ही घर में रहते हैं, जिनके पास संसार में बराबरी करने का दिमाग नहीं होता, कि वे अपना कैरियर बनाकर अच्छा वेतन कमा सके।

पिछली पीढ़ियों के लोगों में मातृत्व की प्रशंसा की जाती थी, स्त्रियों को उनके बच्चों के कारण सराहा जाता था, वे अपने पतियों पर गर्व करती थी और घर बार संभालने की अपनी महारत पर गर्व करती थी। कुल मिलाकर, वे स्त्रियां दबी-कुचली या उबाऊ, अनपढ़, गंवार नहीं होती थी जिन्हें जीवन की सूझबूझ न हो। वे जो कुछ भी होती थी और जो कुछ भी कर रही होती थी उससे संतुष्ट होती थी क्योंकि उन्हें उसी, दृष्टिकोण से सिखाया जाता था।

वे क्या सुनते हैं, या वे क्या देखते हैं?

हमें बेहतरीन शिक्षा कैसे मिलती है? हमारे बच्चों को बेहतरीन शिक्षा कैसे मिलती है?

बोलने के द्वारा माता-पिता के रूप में हमें प्रतिदिन ऐसे शब्दों को बोलना आवश्यक है जिन्हें हमारे बच्चों, को, यदि वे सफल होना चाहते हैं तो सीखना ही होगा।

नमूना देकर हम कोई लंबी बात कभी-कभार ही करे; जबकि जीते हम दिन के चौबीस घण्टे हैं। स्वाभाविक ही है कि हमारे बच्चे जो कुछ हम से सुनते हैं उससे कई गुणा बढ़कर उससे जो वे हम में देखते हैं, सीखते हैं।

विशेषकर क्या व्यवहार में ऐसा ही होता है? अपने पति के साथ बहस करती रहने वाली, घर में उसके मुखिया होने को चुनौती देते रहने वाली स्त्री को अपनी

बेटियों को अपने पतियों के अधीन होना और उनका आदर करना सिखाना कठिन होगा। इसी प्रकार से अपनी पत्नी को गाली गलौच करने वाला पुरुष या नुक्ताचीनी करते रहने वाला आदमी अपने बेटों को अपनी पत्नियों से वैसे प्रेम रखना सिखा नहीं पाएगा जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया; न ही वह अपने बेटों में जिम्मेदारी और लीडरशिप की भावना डाल पाएगा। बिना संदेह के, हमारे बच्चे जीवन के ढंग को हम से ही सीखेंगे, सो हमें बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम उन्हें क्या सिखाते हैं।

वास्तविक अधिकार किसके पास है?

स्त्रियों, पुरुषों, माता-पिताओं को अपने नजदीकी रिश्तों में अधिकार किससे मिलता है? बहुत बार लोग अगुआई करने और अधीन होने को स्थानीय संस्कृति का भाग मानते हैं, इससे बढ़कर कुछ नहीं। पुरुषों पर स्त्रियों के ऊपर केवल इसलिए रोब झाड़ने का आरोप लगाया जाता था क्योंकि वे पुरुष हैं। स्त्रियों को शोषित और दबी-कुचली माना जाता था जैसे वे अपने पतियों के अधीन हो। आज के संसार में अधिकतर बच्चे किसी भी प्रकार के अधिकार का सम्मान नहीं करते, जिस कारण वे उन्हें समझाने वाले किसी भी व्यक्ति से, चाहे वे उनके माता-पिता हो, शिक्षक हो, अधिकारी हो, या सरकार या कोई और हो, नाराज और विद्रोही होते हैं।

परन्तु अधिकार तो परमेश्वर की ओर से मिलता है। सब मनुष्यों और सब मानवीय संबंधों के ऊपर अंतिम अधिकार उसी का है। जब उसने कहा कि पति घर का मुखिया हो, तो वह सृष्टिकर्ता के रूप में पुरुषों को उस बड़े काम पर लगाने के अपने अधिकार में बोल रहा था। जब उसने स्त्री को पुरुष की सहयोगी बनाकर उसे जीवन में उसकी भूमिका दी तो वह फिर से सृष्टिकर्ता के रूप में अपने अधिकार से ही बोल रहा था। कोई भी मनुष्य परमेश्वर के अधिकार, उसकी तरतीब या क्रम या उसके सिस्टम को सफलतापूर्वक चुनौती नहीं दे सकता।

अपनी जिम्मेदारियों को गंभीरता से न निभाने वाले आदमी को न चाहते हुए भी आरोप लगाने वाली और नाराज पत्नी की बातें सुननी पड़ सकती हैं, परन्तु असल सामना तब होगा जब परमेश्वर अपने नियम को तोड़ने के कारण उसे चुनौती देगा। यही बात उस स्त्री पर लागू होती है जो अपने पति की अगुआई को चुनौती देती है। जिससे वह लड़ाई कर रही है, वह वास्तव में उसका पति नहीं, बल्कि परमेश्वर का स्वरूप है जिसने उसे यह अधिकार दिया है।

पुरुषों और स्त्रियों को अपने बच्चों को यह सच्चाई बताने की भी आवश्यकता है। माता पिता को यह नहीं कहना चाहिए कि मैं कहता हूं, इसलिए ऐसा करो। बल्कि अपने बच्चों की भलाई के लिए परमेश्वर की अधीनता में जिम्मेदार होने के कारण माता-पिता के रूप में उन्हें जोर देना चाहिए कि ऐसा करना आवश्यक है। वह नाराजगी और नकारना नहीं रहेगा जो आम तौर पर माता पिता के अधिकार के विरूद्ध बच्चों में आ जाता है; और इससे वे परमेश्वर के अधिकार में उन्हें बड़ा करते हुए सिखाएंगे।

हे बालकों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।

और हे बच्चे वालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए, उनका पालन पोषण करो (इफिसियों 6:1-4)।

हे बालकों, सब बातों में अपने-अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है (कुलुस्सियों 3:20)।

बच्चों को यह सीखना आवश्यक है कि उनके माता-पिता पमरेश्वर के नियमों को मानते हैं। अपने बच्चों को परमेश्वर से प्रेम, अपने माता-पिता की आज्ञा मानने, कानून का आदर करने और हजारों अन्य बातें करने की शिक्षा देने के अलावा उनके पास और कोई रास्ता नहीं है। जिस प्रकार से माता-पिता के लिए बच्चों के पालन पोषण के परमेश्वर के नियमों को मानना आवश्यक है उसी प्रकार से बच्चों के लिए भी केवल अपने माता पिता की ही नहीं बल्कि परमेश्वर की आज्ञा को मानना भी आवश्यक है।

मानवीय संबंधों के भण्डार अगली पीढ़ी को सौंपना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। परिवार के मुखिया के रूप में इसे करने की अधिकतर जिम्मेदारी पति की है। परन्तु पूरा समय घरकी देखभाल करने वाली होने और उसमें बच्चें का पालन-पोष्ण करने की आशीष प्राप्त करने के कारण, स्त्री उससे भी अधिक सिखाती है। जीवन का यही दृष्टिकोण परमेश्वर ने चाहा होगा जो हमारे अन्दर हो। धन्य हैं वे परिवार जो ऐसा करते हैं।

विवाह और घर के लिए परमेश्वर की योजना परपोते-परपोतियों की योजना बनाकर

कोय रोपर

भाग दो

अपने नमूने पर ध्यान दें

वैसे लोग बनें जैसे आपके बच्चे चाहते हैं कि आप बनें। बच्चों को सही बातें सिखाना तो आवश्यक है पर इससे भी आवश्यक आपके लिए बच्चों के सामने सही नमूना रखना है। कई बार आपके बच्चे आपकी बात पर उतना ध्यान नहीं देंगे पर वे जो आप करते हैं और जैसे करते हैं उस पर ध्यान देते हुए आपके जैसा बन जाएंगे। जिस कारण उनके बच्चे भी आमतौर पर उन्हीं के पदचिन्हों पर चलेंगे। इसलिए यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे ईमानदार हों, तो आपको ईमानदार होना आवश्यक है। यदि आप चाहते हैं कि वे मेहनती हों, तो आपको मेहनती होना आवश्यक है। यदि आप उन्हें शिष्टाचारी बनाना चाहते हैं तो आपको शिष्टाचारी बनना आवश्यक है। यदि आप चाहते हैं कि वे परमेश्वर की इच्छा पूरी करने को पहल दें, तो आपको अपने जीवन में परमेश्वर के राज्य को पहल देनी होगी। सबसे बढ़कर यदि आप चाहते हैं कि उनका जीवन परमेश्वर की इच्छा से चले तो आपको उनके सामने मसीही जीवन जीने का धर्म बताना आवश्यक है।

यह सच है कि आपके बच्चे प्रवचन को सुनने के बजाय देखना पसंद करेंगे। यदि आप चाहते हैं कि आपके नाती-पोते महान बनें तो आपका जीवन भला और भक्तिपूर्ण जीवन जीने का ढंग बताने के लिए अपने पूरे जीवन को प्रवचन बनाना होगा।

अपनी शिक्षा पर ध्यान दें

चौथा, अपने बच्चों का प्रभु के अनुशासन और शिक्षा में पालन-पोषण करें। इफिसियों 6:4 में पौलुस की ताड़ना पिताओं के लिए लिखी गई थी, पर यह देखने की कि घर में बच्चों को परमेश्वर का वचन बताया जा रहा है, जिम्मेदारी माता-पिता की थी।

घर में बच्चे जिनके बचपन की यादों में अपने माता-पिता के साथ गाना और प्रार्थना करना और उन्हें बाइबल की कहानियां बताना शामिल है। ऐसे बच्चों के बड़े होकर मसीही बनने की संभावनाएं अधिक हैं, और अपने बच्चों को मसीही बनने की शिक्षा देने की संभावनाएं उनकी अपेक्षा अधिक है, जिनकी यादों में ऐसी कोई बात नहीं होती।

अपनी नागरिकता पर ध्यान दें

अपने बच्चों को जिम्मेदार, उपयोगी नागरिक बनाने के लिए बड़ा करें। आपके नाती-पोते की आवश्यकता है कि कोई उनका पालन-पोषण करे। इस काम के लिए उन्हें माता-पिता की आवश्यकता है जो अपकी सहायता कर सकें और जिम्मेदारी से उनकी देखभाल करें। आपके नाती-पोतों का इन योग्यताओं के अनुसार जीना या न जीना कुछ हद तक इस पर निर्भर करता है कि आपने उनका पालन-पोषण कैसे किया। इसका अर्थ है कि जब आपके बच्चे हो तो आप उन्हें जिम्मेदार कानून का पालन करने वाले बनाना सिखाने की पूरी कोशिश करें।

अपने बच्चों को उपयोगी नागरिक बनाने में सहायता के काम में कई नियम और गतिविधियां हैं उन्हें काम करना सीखने और जिम्मेदारी को मानने में सहायता करें। उन्हें दूसरों के साथ सही व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना और अच्छे नागरिक बनना सिखाएं। उन्हें सीखने में और जहां तक हो सके अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने में सहायता करें। उन्हें अपने गुणों और कुशलताओं को बढ़ाने को प्रोत्साहित करें। प्रतिदिन के जीवन के काम जैसे धन का लेन-देन समस्याओं को सुलझाने समय के प्रबंधन और ऐसी छोटी-छोटी बातों से व्यवहार करने में अगुआई दें।

अधिकतर माता-पिता इन जिम्मेदारियों को उनके परिणामों पर अधिक विचार किए बिना मान लेते हैं। परन्तु जब आप अपने बच्चों को समाज के उपयोगी लोग बनने में सहायता कर रहे हैं, तो आप परदादा या परदादी बनने के लिए अपने आपको तैयार कर रहे हैं।

अपने बच्चों के विवाह पर ध्यान दें

छठा, अपने बच्चों को मसीह लोगों को मसीही व्यक्ति से विवाह करने को प्रोत्साहित करें। आपको न केवल उन्हें वह ढंग बताना है, जिसमें मसीही बनने के लिए उन्हं बढ़ना है बल्कि आपको उन्हें बड़े होने पर मसीही जीवन साथी चुनने के

लिए प्रोत्साहित करने की भी पूरी कोशिश करनी चाहिए। कैसे? स्पष्टतया आप अपने बच्चों को मसीही जीवन साथी के होने का महत्व बता सकते है। क्या आप इतना ही कर सकते हैं?

कई माता-पिता इस पर आपत्ति कर सकते हैं कि उनका अपने बच्चों पर कोई नियंत्रण नहीं हैं कि वे किससे विवाह करेंगे। परन्तु ऐसे समाजों में जहां युवकों और युवतियों द्वारा अपने जीवन साथी को चुना जाता है, माता-पिता भी अपनी पसंद बता सकते हैं। माता-पिता के रूप में आप बहुत हद तक इस बात पर नियंत्रण रख सकते हैं कि आपका बच्चा कैसे लोगों से संगति रखता है। कम से कम अधिकतर मामलों में आपका बेटा या आपकी बेटी उन्हीं में से विवाह के लिए किसी को चुनेगा जिनके साथ वह रहता था रहती है। परिणाम यह होगा कि यदि आप अपने बच्चे को मसीही लोगों के साथ जुड़े होने को प्रोत्साहित करते या प्रबंध करते हैं, तो बच्चे के अधिकतर विवाह की संभावना किसी मसीही से ही होगी।

उदाहरण के लिए, जो माता-पिता ऐसा कर सकते हैं वे यह जानते हुए कि मसीही स्कूल या कॉलेज में अधिकतर मसीही होंगे, अपने बच्चों को वहां भेजना चुन सकते हैं। ऐसे ही माता-पिता को मसीही जवानों के साथ संगति रखने के लिए अपने बच्चों को प्रोत्साहित करने के अन्य अवसरों या लाभ उठाना चाहिए। आपके क्षेत्र की कलीसिया युवाओं के लिए कार्यक्रम बना सकती है या चर्च कैंप लगा सकती है। यह पक्का नहीं है कि बच्चा मसीही व्यक्ति से ही विवाह करना चुने, चाहे उनसे अधिकतर समय अन्य मसीही लोगों के साथ ही बिताया हो। तोभी वे बच्चे जिनके अधिकतर मित्र कलीसिया के भीतर हैं उनकी अपेक्षा जिनके अन्य मसीही युवाओं के साथ कोई संगति नहीं है मसीही लोगों से विवाह करने की अधिक संभावना है।

जीवन साथी का चयन करने में समीपता की सामर्थ मेरे जीवन में दिखाई देती है। मैं अबिलेन क्रिश्चयन कॉलेज (अब अलिन क्रिश्चयन यूनिवर्सिटी) में पढ़ा। वहां मुझे सुन्दर शार्लट शैनन मिल गई और मैंने उससे विवाह कर लिया। क्या मेरा ए.सी. सी. में एक मसीही लड़की से मिलना और विवाह करना संयोग था? मुझे नहीं लगता। वहां ए.सी.सी. में पढ़ाई के दौरान मेरी पूरी नीयत स्कूल की किसी मसीही लड़की से मिलकर उससे विवाह करने की थी, और मैंने कर लिया।

स्पष्टतया अपने बच्चों के जीवनों में समीपता की सामर्थ पर मसीही माता-पिता का कुछ प्रभाव होता है। उन्हें इसका इस्तेमाल मसीही लोगों से विवाह करने के लिए अपने बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए करना चाहिए। यदि वे करते हैं तो वे अपने बच्चों की सहायता कर रहे हैं, पर वे अपनी भी सहायता कर रहे होते हैं। वे अपने परपोतो-परपोतियों के होने की नींव रख रहे होते हैं।

क्रिस्मस या सुसमाचार

डा. एफ़ आर साहू (सी.जी.)

पूरे विश्व में क्रिसमस या बड़ा दिन बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। क्रिसमस का अर्थ है क्राईस्ट की "मास" को मनाना। इसका आरंभ कैथोलिक्र चर्च से हुआ

था। मास के पश्चात इसे "क्राईस्ट की मास" या क्रिसमस का रूप दे दिया गया।

प्रभु यीशु इस संसार में आया था क्योंकि उसे परमेश्वर ने मनुष्य बनाकर मनुष्यजाति के बीच में पृथ्वी पर भेजा था। बाइबल हमें बताती है कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16) परमेश्वर का वचन बताता है कि, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ है। उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न हुई। (यूहन्ना 1:1-3)।

इस वास्तविकता से कोई इंकार नहीं कर सकता कि यीशु मसीह का जन्म अद्भुत तरह से इस जगत में हुआ था परन्तु यह भी एक वास्तविकता है और वचन हमें बताता है कि कहीं पर किसी ने उसका जन्म दिन नहीं मनाया। आज मनुष्य को आवश्यकता है कि बजाय यीशु के जन्म मनाने के उसकी विशेषताओं तथा गुणों को अपने जीवनों में उतारना है। यीशु ने मनुष्य जाति को प्रेम का पाठ सिखाया। उसने मनुष्य जाति को सिखाया कि वे आपस में प्रेम रखोगे। (यूहन्ना 13:34-35)। मसीहियों के लिये यह शिक्षा है कि जब तुम आपस में प्रेम रखेगे तब लोग यह जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" बाईबल कहती है, हे बालको हम वचन और जीभ से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करे। (1 यूहन्ना 3:18)। प्रभु यीशु ने अपने जीवन में प्रेम करके दिखाया।

बाइबल बताती है कि उसने हमसे प्रेम करके अपने आपको क्रूस पर बलिदान कर दिया। प्रेरित पौलुस कहता है कि "और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने आपको सुखदायक सुगंध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।" (इफि. 5:2)। वह सारी मनुष्यजाति के लिये अपना स्वर्गीय वैभव का त्याग करके एक सेवक बन गया। इसलिये हम मसीही उसके स्वभाव का अनुकरण करे और दूसरों के लिये एक अच्छा नमूना बने। (1 पतरस 2:21-22)। उसने सिखाया था कि अपने शत्रुओं को भी क्षमा करे।

बाइबल हमें संदेश देती है लूका के दो अध्याय में और ग्यारहवें पद में "कि आज दाऊद के नगर में, तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है। और यही मसीह प्रभु हे। मित्रो बाइबल में लिखा है कि यीशु का जन्म हुआ परन्तु कहीं पर भी कुछ नहीं बताती कि 25 दिसम्बर को उसका जन्म हुआथा। यीशु एक उद्धारकर्ता बनकर इस संसार में आया था। उसने कभी नहीं चाहा कि लोग उसका जन्मदिन मनाये। परमेश्वर का ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था और आज मनुष्य को क्रिस्मस या बड़े दिन की आवश्यकता नहीं है। आज मनुष्य को सुसमाचार की आवश्यकता है और सुसमाचार का अर्थ है खुशी की खबर तथा बाइबल अनुसार आज जगत के लिये यह शुभ संदेश है, कि यीशु हमारे पापों के लिये मारा गया, गाड़ा गया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा। (1 कुरि. 15:1-4)। यदि मनुष्य पापों से मुक्ति चाहता है तो उसे उद्धार पाने के लिये सुसमाचार को मानना पड़ेगा। यदि आप अनन्त जीवन

पाना चाहते हैं तो यीशु के पास आये। वह आपको बुला रहा है। (मत्ती 11:28-29)। यीशु ने अपने चेलों को यह बड़ी आज्ञा दी थी कि सारे जगत में जाकर सुसमाचार प्रचार करो। (मत्ती 28:18-19)। आज प्रत्येक मसीही के लिये यह बड़ी आज्ञा है कि सारे संसार में सुसमाचार को ले जायें।

यदि कोई खुशी मनाना चाहता है तो यह खुशी मनाये कि यीशु आपके पापों ले लिये क्रूस पर बलिदान हुआ जिसे हम अनन्त बलिदान कहते हैं। आज मसीही लोग प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन उसकी मृत्यु की यादगारी को मनाते है। जिसे हम प्रभु भोज कहते है। (प्रेरितों 20:7, 1 कुरि. 11:23-29)। आज प्रत्येक मसीही को यह समझना चाहिए कि उसके लिये क्या महत्वपूर्ण है, क्रिसमस या सुसमाचार? प्रेरित कहता है, "तुम दिनों और महीनों और नियत समयों और वर्षों को मानते हो। मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं कि कहीं ऐसा न हो कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे लिये किया है वह व्यर्थ ठहरे" (गलतियों 4:10-11)। मसीहीयों को अपनी पत्री में लिखा था कि, "चौकस रहो, कि कोई तुम्हें उस तत्व ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अपना अहरे न बना ले जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह यीशु के अनुसार नहीं। इसलिये खाने-पीने या पर्व या नये चांद या सबत के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे।" (कुल. 2:8-16)। आपके जीवन में आज कौन-सी बात महत्वपूर्ण है? क्रिसमस (बड़ा दिन) या गॉस्पल (सुसमाचार)? क्रिसमस मनुष्य द्वारा बनाया हुआ है परन्तु गॉस्पल परमेश्वर ने दिया है ताकि इसको मानने के द्वारा मनुष्य का पापों से उद्धार हो सके। आपके लिये क्या महत्वपूर्ण है, क्रिसमस या सुसमाचार?

एक में तीन व्यक्ति होने का क्या अर्थ है?

जैरी बेट्स

हमने देखा कि परमेश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं और तीनों में खुदा की खूबियां हैं। बाइबल तीन व्यक्तियों को, केवल तीन व्यक्तियों को ईश्वरीय पदों वाला दिखाती है। हाग्गै 2:5-7 पर ध्यान दें वहां लिखा है कि "तुम्हारे मिस्र से निकलने के समय जो वाचा मैं ने तुम से बांधी थी, उसी वाचा के अनुसार मेरा आत्मा तुम्हारे बीच में बना है इसलिये तुम मत डरो। क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अब थोड़ी ही देर बाकी है कि मैं आकाश और पृथ्वी और समुद्र और स्थल सब को कम्पित करूंगा। और मैं सारी जातियों को कम्प कपाऊंगा और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूंगा। सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।" तीन जीवों को परमेश्वर के रूप में बताया गया है, सेनाओं का यहोवा आत्मा और सारी जातियों की मन भावनी वस्तुएं। सारी जातियों की मनभावनी वस्तु स्पष्टतया यीशु को कहा गया है। इसी प्रकार से मती 28:19 में इन्हीं तीनों को परमेश्वर के रूप में इकट्ठे बताया गया है, इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा

दो। इस वचन में नाम शब्द एक वचन में है। इसका अर्थ यह हुआ कि तीनों का एक ही नाम है। इसके अलावा 2 कुरिन्थियों 13:14 में पौलुस ने सभी तीनों को इक्ट्ठे बताया है, प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

परमेश्वरत्व के विचार को देखने की उम्मीद पुराने नियम में नहीं होगी। इसके बावजूद पुराने नियम में कई वचन हैं जो निश्चित रूप में परमेश्वर की शिक्षा के साथ मेल खाते हैं। इनमें से सब स्पष्ट वचनों में से एक परमेश्वर के संबंध में बहुवचनों का इस्तेमाल है। यदि परमेश्वर एक है तो परमेश्वर के संबंध में केवल एकवचन रूपों का ही इस्तेमाल होना चाहिए। फिर भी परमेश्वर के लिए इब्रानी नाम इलोहीम बहुवचन रूप में है। आवश्यक नहीं है कि यह अपने आप में बहुवचन का संकेत देता हो पर उत्पत्ति 1:2 पर ध्यान दें फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं।" कहा गया, शब्द एकवचन में है पर अपने स्वरूप और अपनी समानता शब्दों की तरह हम बनाएं क्रिया शब्द बहुवचन में हैं। ऐसे और उदाहरण देखे जा सकते हैं। फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है (उत्पत्ति 3:22) एक और उदाहरण पर ध्यान दें, इस बार यह यशायाह 6:8 से है, तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना है, किस को भेजूं और हमारी ओर से कौन जाएगा? एकवचन से बहुवचन में जाने की बात महत्वपूर्ण है।

हम परमेश्वरत्व को कैसे समझ सकते हैं?

हमने देखा है कि बाइबल परमेश्वर के एक होने की स्पष्ट घोषणा करती है। इसके बावजूद साथ ही अन्य स्थानों में बहुवचन रूप में होने की घोषणा और संकेत देती है। हम इस रहस्यमयी अवधारणा को कैसे समझ सकते हैं? परमेश्वर एक है, परन्तु वह संख्या में एक नहीं है बल्कि गुण या एकता में एक है। व्यवस्थाविवरण 6:4:5 में बाइबल में एकता के प्रसिद्ध वचन पर ध्यान दें, हे इस्राएल सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है। इब्रानी भाषा में एक के लिए दो शब्द है। एक शब्द एक या विलक्षण होने का संकेत देता है। जैसे अब्राहम को अपने पुत्र की बली देने को कहा गया था। एक और शब्द जिसका इस्तेमाल व्यवस्थाविवरण 6 में हुआ है, कई कारकों की एकता या मेल का संकेत देता है। उत्पत्ति 2:24 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बनें रहेंगे।

परमेश्वरत्व को समझाने के लिए कई रूपक सुझाए गए हैं परन्तु कोई भी सम्पूर्ण नहीं है। परमेश्वरत्व की तुलना पानी से की गई है जो ठोस, तरल या भाप के रूप में होता है। इस उदाहरण में मुख्य समस्या यह है कि पानी एक समय में तीनों रूपों में नहीं हो सकता। परमेश्वरत्व की तुलना अंडे से की गई है जिसमें खोल, ज़र्दी और सफेद भाग होता है, पर यह फिर भी एक अंडा है। परमेश्वरत्व की तुलना कई भौतिक वस्तुओं से की गई है। एक उदाहरण यह है कि एक इंसान एक ही समय में पिता और पुत्र और पति हो सकता है। इस उदाहरण में समस्या यह है कि एक व्यक्ति एक ही व्यक्ति का पिता, पुत्र और पति नहीं हो सकता। मुझे खासतौर पर

बाइबल का उदाहरण पसंद है। उत्पत्ति एक में परमेश्वर आज्ञा देता है कि पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ अपनी पत्नी के साथ मिला रहे और वे दोनों एक तन हो। साफ है कि वे दोनों अलग व्यक्ति रहते हैं पर उन्हें पूरी तरह से एक हो जाना चाहिए। इसी प्रकार से यूहन्ना 17:11 में यीशु ने प्रार्थना की थी कि जिस प्रकार से वह और पिता एक है वैसे ही मसीही लोग भी एक हों। साफ है कि सब मसीही लोग वास्तव में एक व्यक्ति नहीं बन सकते। इसी प्रकार पौलुस ने कहा कि लगाने वाला और सींचने वाला दोनों एक हैं। बेशक हमें इस बात को समझना आवश्यक है कि मनुष्यों के एक होने की सीमित करने वाली बातें परमेश्वर पर लागू नहीं होती, इस कारण परमेश्वरत्व मनुष्यों की समझ से कहीं बढ़कर एक हैं।

परमेश्वरत्व को देखने का एक ओर ढंग परमेश्वर को सोसाइटी के रूप में देखना है जिसमें अलग अलग लोग होते हैं। वे प्रेम से एक दूसरे के साथ बंधे हुए है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8, 16)। प्रेम उन्हें इतना कसकर बांधता है कि वे एक हो जाते हैं। प्रेम के लिए प्रेम करने वाला और जिससे प्रेम किया जाता है दोनों होने आवश्यक हैं। इस कारण संसार की सृष्टि से पहले परमेश्वर से सचमुच में तब तक प्रेम नहीं किया जा सकता था जब तक वह एक से अधिक नहीं होता। यह नाकाफी लग सकता है, परन्तु मनुष्यों में कई सीमित करने वाली बाते हैं जो खुदा में नहीं है। हमें शारीरिक देहों के द्वारा अलग किया गया है। परमेश्वर तो आत्मा है इसलिए उस पर यह सीमा लागू नहीं होती। इसीलिए सब मनुष्यों के अलग अलग अनुभव होते हें जो हमारे जीवनों के हर पहलू को प्रभावित करते हैं। साफ है कि यह सीमा परमेश्वर पर लागू नहीं होती। हर मनुष्य के पहले से अपने विचार, अपनी समस्याएं और आवश्यकताएं होती हैं, पर परमेश्वर के स्वभाव में ऐसा कुछ नहीं है। ये सब बातें, और शायद और भी हो सकती हैं, हमारे लिए पूरी तरह से अन्य मनुष्यों पर फोकस करना, उन्हें समझना या उनके साथ सहानुभूति रखना संभव बना देती है परन्तु परमेश्वर पर ये सीमाएं लागू नहीं होती जिस कारण वह उससे बढ़कर पूरी तरह से एक हो सकता है जो कि मनुष्यों के लिए संभव नहीं है।

शान्ति व सहभागिता

ऍंडी क्लोर

थोड़ी देर में (यूहन्ना 16)

थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे। तब उसके कितने चेलों ने आपस में कहा, यह क्या है, जो वह हम से कहता है, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे? और यह इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं? तब उन्होंने कहा, यह थोड़ी देर जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते कि क्या कहता है? (आयतें 16-24)।

यीशु ने अपने प्रेरितों को कुछ बातों के लिए जो उनके सामने निकाली थी ब्यान करने के लिए करूणा से भरी बातचीत के एक सिलसिले में बताना चुना, जिसकी

समीक्षा हमारे लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार में दर्ज की गई है। (देखें अध्याय 13 से 16) यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने की उस बड़ी मुसीबत के आने पर विचारशील याद दिलाने वाली बातों, भविष्य की योजनाओं और ईश्वरीय शांति से उनके मनों को मजबूत किया। यह प्रोत्साहन देते हुए (16:16-24)। यीशु ने उन्हें विशेषकर दोहरे भविष्य के लिए मजबूत किया जिसमें एक तो वह था जो शीघ्र होने वाला था और एक दूर क्षितिज में लटक रहा था।

उसका मुख्य विचार, थोड़ी देर वाक्यांश में समाया हुआ था जो ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका इस्तेमाल इन नौ आयतों में उसके या प्रेरितों द्वारा सात बार किया गया। पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई और छुटकारे की महान योजना का समापन होने को था जिसे पूरा करने के लिए वह अपनी पूरी सेवकाई में लगा हुआ था अब वह वास्तविकता में बड़ी होने वाली थी। समय किसी की राह नहीं देखता पर हर कोई उस समय का जो उसके पास हैं थोड़ा सा अंश प्रभावशाली ढंग से इसे पूरा कर सकता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अपनी सेवकाई के लिए परमेश्वर की मंशा को पाने के लिए छह महीने से एक साल का समय मिला था। और यीशु को उस काम को करने के लिए जो उसे दिया गया था लगभग साढ़े तीन साल मिले। स्पष्टतया इस गुरूवार की शाम मनुष्य का पुत्र समय के बीतने और उसके काम के अपने चरम तक पहुंचने के ढंग के प्रति सचेत था। वह उस अंत के लिए जो आने वाला था अपने प्रेरितों को तैयार करना चाहता था।

16:16-62 "थोड़ी देर" वाक्यांश से यीशु का क्या अभिप्राय था? इसके अर्थ में हम देखते हैं कि यीशु ने सारी मनुष्यजाति के लिए क्या किया।

एक पूरा हुआ उद्धार

वह कह रहा था, "थोड़ी देर में तुम्हें पूरा हुआ उद्धार मिलेगा।" थोड़ी देर में, यीशु ने कहा, मुझे न देखोगे (16:16क)। पृथ्वी से उसका जाना अर्थात अपने चेलों से उसकी शारीरिक उपस्थिति को छोड़ना यह प्रगट करता था कि उसने छुटकारे का अपना काम पूरा कर लिया है। उसकी बातों का अर्थ था कि उसका काम लगभग पूरा हो चुका है और मसीही युग के लिए यीशु की योजना अमल में आने वाली थी।

उसके संक्षिप्त वाक्यांश "थोड़ी देर" के संकेत के अनुसार अब तक की लगभग सबसे बड़ी घटनाएं होने वाली थी। एक घण्टे या थोड़ी और देर में गिरफ्तार करने वाली भीड़ उसे पकड़ने उस पर मुकद्दमा करने और क्रूस पर चढ़ाने के लिए आ गई। अपनी मृत्यु के बाद यीशु ने तीन दिन कब्र में रहकर और फिर मुर्दों में से जी उठकर और चालीस दिन तक यह दिखाना था कि वह जीवित है। फिर उसने पिता के पास ऊपर उठाया जाना था। इन घटनाओं के वास्तविक महत्व का संसार में किसी को पता नहीं होगा। यीशु ने हमारे उद्धार के लिए अपने काम को जल्द पूरा कर लेना था और कलीसिया के मुखिया के रूप में शासन करने लिए पिता के दाहिने हाथ बैठने के लिए स्वर्ग में लौट जाना था।

कलीसिया का खरीदा जाना और संसार का उद्धार के लिए अवसर देना एक यातनामय अर्थात बलिदानपूर्वक कीमत से हुआथा। स्वर्गदूत बेशक इससे सहमत थे पर "संसार इससे अनजान था। जिस व्यक्ति ने इस अनन्त जीवन को जो यीशु देता

है नहीं पाया है उसने मनुष्य के लिए स्वर्ग के सबसे ऊंचे उपहार से मुंह फेर लिया था। थोड़ी देर बीत चुकी थी और उद्धार का दिन आ गया है। आइए हम यह सुनिश्चित कर लें कि हम इस कीमत को नजरअंदाजन न करें।"

अखण्ड संगति

वह कहा रहा था थोड़ी देर में न खत्म होने वाली संगति के लिए हम पढ़ते हैं और फिर थोड़ी में (16:16क)। यीशु की बातों का अर्थ वह संगति होगा जिसकी प्रतिज्ञा उसने जातियों में अपने सुसमाचार को मनाए जाने वालों के साथ की (मत्ती 28:20)। प्रेरितों ने उसके ऊपर उठाए जाने के बाद फिर से उसकी उपस्थिति में होना था, वे इस बात से अवगत थे कि वह गैर शारीरिक ढंग से अर्थात आत्मिक रूप में उनके साथ रहेगा। पवित्र आत्मा को भेजा जाना था ताकि यीशु इस आत्मिक अर्थ में उनके साथ रह सके। आत्मा में उनके प्रचार करने और लिखने और सेवा करने में अगुआई देते हुए उन्हें सब सत्य का मार्ग दिखाना था। उसकी अगुआई के द्वारा उन्होंने इस बात से परिचित होना था कि वे यीशु की इच्छा, स्वीकृति और उपस्थिति में बने हुए हैं।

केवल आत्मा की अगुआई में चलने वाला व्यक्ति ही यीशु की आत्मिक उपस्थिति को जान सकता है। आत्मा हमारे अंदर यीशु अर्थात कलीसिया के प्रभु को महिमा देने के लिए रहता है। जो व्यक्ति यीशु की उपस्थिति को नहीं जानता वह उस सबसे बड़ी संगति से चूक गया है जो किसी को मिल सकती है।

अनन्त आनन्द

वह कह रहा था, थोड़ी देर में, तुम्हें अनन्त आनन्द मिलेगा। यीशु ने घोषणा की, मैं तुम से सच सच कहता हूं क तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा, तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा आनन्द बन जाएगा। जब स्त्री जनने लगती है तो उसको शोक होता है, क्योंकि उसकी दुख की घड़ी आ पहुंची है, परन्तु जब बालक को जन्म दे चुकी होती है तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण नहीं करती। और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनंद होगा, और तुम्हारा आनंद कोई तुम से छीन न लेगा (16:20-22)।

अगले दिनों में प्रेरितों ने रोना और विलाप करना था जबकि संसार ने यह सोचकर कि यीशु की शिक्षाओं को पृथ्वी पर से हटा दिया गया है आनन्द करना था। परन्तु समय के बीतने पर उन्हें समझ आना था कि उनके रोने का कारण ही उनके आनन्द का कारण बन गया। यीशु की मृत्यु जिससे संसार थोड़ी देर के लिए आनन्दित था, प्रेरितों के लिए अनन्त आनन्द का अवसर था। यीशु ने इस बदलाव की तुलना स्त्री के बच्चे को जनम देने से की। स्त्री की जनने की पीड़ा बाद में उसके आनन्द का कारण बन जाती है, उसकी पीड़ा सुख में बदल जाती है जब वह अपने नन्हें बालक को अपनी गोद में लेती है और उसके जीवन में मां के रूप में आती है। बच्चे की उपस्थिति मां के लिए भरपूर आनन्द का कारण बनती है।

मसीहियत सम्पूर्ण में स्थापित हो जाने के बाद, प्रेरितों ने अपने उद्धार अर्थात यीशु की संगति और अनन्त आशा में अखण्ड और बने रहने वाले आनन्द का अनुभव

किया (सब मसीही लोग)। वे क्रूस, पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के कारण को और स्पष्ट ढंग से देख पाए थे। क्षमा, यीशु के साथ संगति और पवित्र आत्मा के आने से उनके मनों में स्वर्ग का आनन्द भर गया।

आनन्द हमेशा बड़ी वास्तविकताओं के बाद होता है। इस आनन्द तक अपने आप नहीं पहुंच सकते, बल्कि जब हम यीशु के पास आते हैं तो वह हमारे मनों में प्रवेश करके अपने साथ आनन्द ले आता है। संसार के किसी आनन्द की तुलना उस अनन्त आनन्द से नहीं की जा सकती जो यीशु देता है। यह परमेश्वर की क्षमा और यीशु की उपस्थिति से मिलता है और यह बना रहने वाला है।

एक मसीही को अलग होना आवश्यक है

मैक्स पैटरसन

एक समय था जब हमारे प्रचारक और शिक्षक जबर्दस्ती सिखाया करते थे कि मसीही लोगों को संसार के लोगों से अलग होना आवश्यक है। 2 कुरिन्थियों 6:14-18 सहित कई हवाले भी बताए जाते थे, "प्रभु कहता है उनके बीच में से अलग रहो।"

आज कलीसिया के अंदर यह बात पाई जाती है जिसमें कहा जाता है कि "हमें अलग नहीं होना चाहिए।" हमें लोगों की तरह रहते हुए उनके साथ घुल मिलकर रहना जाना चाहिए, हमारा पहरावा या हमारे काम "अलग नहीं दिखने चाहिए।" मेरा मानना है कि यह बिल्कुल अलग है और बिल्कुल उलट है परन्तु हमें बाइबल सिखाती है। कि:

हमारी भाषा: एक और जहां संसार प्रभु का नाम व्यर्थ लेता है, गंदी गंदी सांकेतिक कहानियां और अफवाहें और बदनाम करने वाली बातें बताता है, वहीं मसीही व्यक्ति के लिए इन सब बातों से अलग रहना और अपनी भाषा को परमेश्वर की महिमा के लिए और लोगों के उद्धार के लिए इस्तेमाल करना आवश्यक है। (मत्ती 12:36, 37; रोमियों 1:29, 39; 1 तीमुथियुस 4:12)।

हमारी सोच: संसार जहां हमारे दिमाग में वासना, व्यभिचार, अशुद्धता का कूड़ा भर रहा है वही एक मसीही व्यक्ति उन बातों पर विचार करने की कोशिश कर रहा है जो आदर योग्य, साफ सुथरी और आवश्यक है (फिलिप्पियों 4:8)।

सबसे आवश्यक है: जो खुद को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानता है और संतुष्ट होता है, वही मसीही व्यक्ति के राज्य और उसकी धार्मिकता को ढूंढ़ने की पहल देने की कोशिश करता है (मत्ती 6:3)।

हमारे घर: संसार जहां परिवार पर आक्रमण कर रहा है और इसे नष्ट करने के लिए हर दबाव डाल रहा है, वहीं मसीही व्यक्ति इसे ईश्वरीय संस्थान तथा अपने प्रसन्नता के लिए मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर की योजना के भाग के रूप में देखता है (मत्ती 19:1-9; इफिसियों 5:23-28)।

हमारा परोपकार: संसार जहां केवल अपने बारे में ही सोचता है वहीं मसीही लोग दूसरों की आवश्यकताओं की चिंता करते हैं (याकूब 1:26, 27)।

संसार जहां इस संसार के ईश्वरों के प्रयोजन में आकर आनन्दित होता है, वहीं मसीही लोग परमेश्वर की आराधना करते हैं (यूहन्ना 4:24; मत्ती 4:8-1)।

क्या यह साबित करने के लिए कि मसीही लोगों को अलग होना चाहिए कुछ और कहने को रह गया है? वे मसीही जो सिखाते हैं कि हमें भीड़ के साथ मिलकर चलना चाहिए (आखिर हम दूसरों से अलग नहीं दिखना चाहते) वे अपनी गहराई की कमी, आत्मिकता के अपने छिछलेपन को दिखाते है। उन्हें इस मसीही जीवन से अपमानित होने से रोकने के लिए जो अलग होने वाले सब लोगों को कहा जाता है, विश्वास नहीं है। पौलुस ने कहा है, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता" (रोमियों 1:16)।

उचित दूरी बनायें रखें और अलग होने की हिम्मत करें। और ऐसा इन्सान बनने की हिम्मत करें जिसके लिए यीशु मसीह मरा और जो हमारे बनने के लिए उसने संभव बनाया।

आशीषें और जिम्मेवारियाँ

सूज़ी फ्रैड्रिक

प्रभु यीशु ने हमें लूका 12:48 में बताया है, "इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया है, उस से बहुत मांगेगे।" (लूका 12:48)। जबकि परमेश्वर ने हमें बहुतायत से आशिषित किया है, तब वह हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम अपनी आशीषों का इस्तेमाल बुद्धिमानी से करें। परमेश्वर ने आपको कैसे आशीषित किया है? इसके बदले में वह आपसे क्या चाहता है? वास्तव में प्रत्येक जन को इसका उत्तर व्यक्तिगत रूप से देना चाहिये।

परमेश्वर ने किस प्रकार से आपको स्वस्थ रखा है? यदि आपका स्वस्थ सही है तो आपके पास यह सुअवसर है कि आप उन लोगों की सहायता करें जो बीमार है। शायद उन्हें यह आवश्यकता है कि कोई उनके घर में खाना पकाकर भेजे या जब तक वह ठीक न हो जाएं उनके बच्चों की देखभाल कर सकें। इस प्रकार से, आपका अच्छा स्वास्थ्य किसी और के लिए एक आशिष का कारण हो सकता है। क्या परमेश्वर ने आपको पैसे से अशीषित किया है? यदि आपके पास पैसा है तो आप इसे दूसरों के हित के लिये किस प्रकार से इस्तेमाल कर सकते हैं? सारे संसार में आज लोगों को यह जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर का पुत्र, प्रभु यीशु मसीह है। पैसे की आवश्यकता इसलिये होती है ताकि सुसमाचार प्रचारकों की सहायता की जा सके? और उन्हें इस योग्य बनाया जा सके ताकि वे अपना समय प्रचार करने में व्यतित कर सकें। शायद आप कुछ ऐसे लोगों को जानती हैं, जिन्हें खाना, कपड़ा तथा जीवन की और अन्य वस्तुओं की आवश्यकता है? आपका पैसा उनकी भलाई के लिये इस्तेमाल हो सकता है। आप जैसे मसीहीयों का प्रेम लोगों

के मनों को सुसमाचार के लिये खोलेगा।

क्या परमेश्वर ने आपको अच्छी शिक्षा से आशीषित किया है? यदि आप इस लेख को पढ़ रही हैं तो आप संसार के कई लोगों से अधिक आशीषित हैं। इस पापी संसार के लिये केवल यीशु का सुसमाचार एक आशा है। प्रेरित पौलूस ने लिखा था, "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों 1:16)। कोई भी मनुष्य जब सुसमाचार में विश्वास लाता है तथा उसको मानता है तब उसको पापों से क्षमा मिलती है (रोमियों 6:17-18) प्रत्येक जन को सबसे पहिले सुसमाचार सुनने की आवश्यकता है, क्योंकि विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। (रोमियों 10:17)। क्या आप उन्हें वचन सिखायेंगे जो अपने आप पढ़ नहीं सकते? अपनी आशिषों का उपयोग कीजिये ताकि उससे दूसरों को लाभ हो सके और परमेश्वर इस बात से प्रसन्न होगा। यदि आप ऐसा करेंगे तब वह आपको बहुत आशिषित करेगा। अपनी अशीषों को गिनें तथा जिम्मेवारियों को समझें।

मुक्ति की आवश्यकता

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

मसीहीयत का सम्बन्ध उन लोगों से है जो 'मसीही' कहलाते हैं। (प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16)। एक मसीही वोह है जो यीशु मसीह का अनुसरण करनेवाला है। किन्तु, मसीही होने की आवश्यकता क्यों है? इस बात का जवाब यह है; क्योंकि हमें पाप से मुक्ति की आवश्यकता है। और पाप से मुक्ति की आवश्यकता को समझने के लिये हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हम सब ज़िम्मेदार प्राणी हैं और हम सबको परमेश्वर को अपने-अपने जीवनों का लेखा देना है।

मनुष्य, एक पशु के समान, केवल शरीर ही नहीं है। किन्तु मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है, जिसके भीतर एक "आत्मा" है। (प्रेरितों 7:59; 1 कुरि. 2:11; 1 थिस्स. 5:23; याकूब 2:26)। आरम्भ में परमेश्वर ने सब कुछ बनाया था (उत्पत्ति 1:1), परन्तु मनुष्य को परमेश्वर ने "अपने स्वरूप" पर बनाया था। (उत्पत्ति 1:26,27; कुलु. 3:10; याकूब 3:9)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने मनुष्य को बुद्धि और समझ दी है। हम समझ सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं कि एक सर्वशक्तिमान "परमेश्वर" है जिसने हमें बनाया है। हम सही और गलत को समझ सकते हैं। हम अपनी गलती को अनुभव कर सकते हैं, और जानते हैं कि अच्छाई और बुराई क्या है। हम परमेश्वर की महानता को समझकर उसके प्रति अपने आदर और सम्मान को व्यक्त कर सकते हैं। हम परमेश्वर की भक्ति और उपासना करते हैं; और वास्तव में पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सब जगह मनुष्यों के भीतर परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा है। पर हम परमेश्वर की इच्छा को जानकर उसकी इच्छा का पालन भी कर सकते हैं। (मत्ती 5:48; इफि. 4:21-23; 1 पतरस 1:14-16)।

प्रेरित पौलुस जब यूनान के अथेने नगर में गया था, तो वहाँ उसने पाया था कि वहाँ के निवासी "अत्यन्त धार्मिक" स्वभाव के थे (प्रेरितों 17:22)। उन्होंने अनेक देवताओं के सम्मान में बेदियां बना रखीं थीं, जिनमें से एक पर लिखा था "अनजाने ईश्वर के लिये"। (प्रेरितों 17:23)। तब पौलुस ने उन्हें सच्चे परमेश्वर के बारे में इन शब्दों में बताया था :

> "जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वोह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वोह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सिवानों को इसलिये बाँधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढें, और कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौभी वोह हम में से किसी से दूर नहीं! क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।" (प्रेरितों 17:24-28)।

परमेश्वर क्योंकि हमारा सृजनहार है, इसलिये हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं। (यशायाह 43:7; प्रकाशित. 4:11)। अथेने के लोगों से पौलुस ने यह भी कहा था कि एक दिन परमेश्वर उनका न्याय करेगा : "अब वोह हर जगह पर सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है, क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वोह सारे जगत का धार्मिकता के साथ न्याय करेगा।" (प्रेरितों 17:30)। परमेश्वर ने क्योंकि सही और गलत को समझने के लिये हमें बुद्धि दी है, इसलिये हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं। पौलुस ने एक जगह कहा था, कि व्यवस्था के बिना भी लोग "स्वभाव ही से" व्यवस्था का अनुसरण करते थे। (रोमियों 2:14)। क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर है (भजन 19:1-6; रोमियों 1:19-20), और क्योंकि हम सही और गलत की पहचान रखते हैं, इसलिये हमें अपने विचारों और कामों और जीवनों का लेखा परमेश्वर को देना होगा। (प्रेरितों 10:42; रोमियों 2:16; 1 कुरि. 4.5)।

पर खेदपूर्ण सच्चाई यह है कि सब लोग जो समझदार हैं और अच्छाई और बुराई में अन्तर देखने के योग्य हैं, उन सबने पाप किया है। जो कुछ भी परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है वही पाप है। अर्थात पाप "परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन" है। (1 यूहन्ना 3:4)। "सब प्रकार का अधर्म पाप है।" (1 यूहन्ना 5:17)। जो कुछ भी परमेश्वर की इच्छानुसार है वोह सही है, और जो कुछ भी उसकी इच्छा के विरूद्ध है वोह गलत है। परमेश्वर प्रेम है, इसलिये प्रेम न रखना पाप है। (1 यूहन्ना 4:8,16)। सच्चाई सही है, क्योंकि परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता। (तीतुस 1:2)। नए नियम में बहुत सी बातों का उल्लेख मिलता है जिन्हें पाप कहा गया है। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने लिखकर कहा था:

> "सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए ; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए। और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर

करनेवाले, अभिमानी, डींगमार बुरी-बुरी बातों के बनानेवाले, माता-पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दयी हो गए।" (रोमियों 1:29-31)।

प्रेरित पौलुस ने भी "शरीर के कामों" का वर्णन करके एक जगह इस प्रकार कहा था: "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इनके ऐसे-ऐसे और काम" (गलतियों 5:19-21)। प्रेरित पौलुस ने कहा था कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगे, यदि वे अपना मन प्रत्येक पाप से फिराकर परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चलेंगे। (1 कुरि. 6:9-10; कुलु. 3:5-10; 1 तिमु. 1:9-11; 2 तिमु. 3:2-5; याकूब 3:14-16; 1 पतरस 2:1-2)।

अपने पाप के लिये हम अन्य किसी को भी ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकते। प्रत्येक व्यक्ति परीक्षा में फंसकर स्वयं पाप करता है (याकूब 1:12-15)। यद्यपि आदम और हव्वा के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया था, लेकिन उन्हें पाप करने के लिये किसी ने विवश नहीं किया था। हम सबने स्वयं अपनी ही इच्छा से पाप किया है। और इसी प्रकार पाप संसार भर में फैला है। (रोमियों 5:12)। जिस प्रकार मसीह का अनुसरण करने से लोगों का पाप से उद्धार होता है, उसी प्रकार जो लोग आदम के दिखाए मार्ग पर चलते हैं वे अपने ही पाप के कारण नाश होंगे। (रोमियों 5:15-21) कुछ लोग यह गलत शिक्षा देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इसलिये पापी है क्योंकि आदम ने पाप किया था, और इसलिये मनुष्य स्वभाव से ही पाप के साथ उत्पन्न होता है। किन्तु बाइबल इसके विपरीत सिखाती है। हर एक इनसान स्वयं व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के निकट ज़िम्मेदार है। बच्चे अपने माता-पिता या आदम के पाप के कारण दोषी नहीं ठहरेंगे। और ऐसे ही, माता-पिता भी अपनी संतान के अधर्म के लिये दोषी नहीं ठहराए जाएंगे। (यिर्मयाह 31:29-30; यहेजकेल 18:20)। हम में से प्रत्येक जन परमेश्वर के निकट स्वयं अपने ही कामों के लिये ज़िम्मेदार है।

क्योंकि हम पाप में हैं और परमेश्वर पवित्र तथा पाप-रहित है, इसलिये हम परमेश्वर से अलग हैं। (यशायाह 59:1-2)। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके पाप के कारण अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया था (उत्पत्ति 3:1-24)। ऐसे ही परमेश्वर हमें भी हमारे ही पाप के लिये दोषी मानता है। सबके सब पाप के वश में हैं (रोमियों 3:9) "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं" (रोमियों 3:10)। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23; 1 यूहन्ना 1:8-10)। "पाप की मजदूरी मृत्यु है।" (रोमियों 6:23; गल. 6:7,8)। हम सब क्योंकि पाप के वश में हैं, इसलिये, हम सबको पाप से मुक्ति की आवश्यकता है। हम स्वयं अपने आपको पाप से मुक्त नहीं कर सकते। (रोमियों 5:6)। हमें परमेश्वर की आवश्यकता है। हमें एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है।